SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

September 2021 Special Issue 02 Vol. VI

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका

- अतिथि संपादक -

डॉ. राजेंद्र उमेकर

प्राचार्य,

बी.एस. पाटील कॉलेज,परतवाडा

- कार्यकारी संपादक -

डॉ.गजानन चव्हाण

प्रधान सचिव

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ. जिजाबराव पाटील

अध्यक्ष

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ. अरूण धोगरे

हिंदी विभागाध्यक्ष

बी.एस.पाटील कॉलेज,परतवाडा

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

September 2021

Special Issue 02 Vol. VI

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका

अतिथि संपादक
डॉ. राजेंद्र उमेकर
प्राचार्य
बी.एस.पाटील कॉलेज, परतवाडा

कार्यकारी संपादक

डॉ.गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. डॉ. अरुण घोगरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
बी.एस.पाटील कॉलेज, परतवाडा

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon (Maharashtra)425201

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

Index

Sr.No	Title of the Paper & Author's Name	Pg.No
1	मीराकांत की 'गली दुल्हनवाली' कहानी संग्रह में नारी चेतना की सार्थक तलाश- **डॉ. राजेंद्र उमेकर**	07
2	'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर और नारी विमर्श- **डॉ. अरुण घोगरे**	09
3	'समय सरगम' उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी - **डॉ. अनिल साळुंखे / अमोल मोरे**	12
4	स्त्री अस्मिता की तलाश करती आत्मकथा-'अन्या से अनन्या'- **प्रो. डॉ. रणजीत जाधव**	15
5	'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में सामाजिकता-**प्रो.डॉ. जिजाबराव पाटील**	18
6	मानवीय रिश्तों की उलझन - 'अन्या से अनन्या ' - **डॉ.संजय विक्रम ढोडरे**	21
7	'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श के विविध आयाम- **डॉ.महेंद्र रघुवंशी**	24
8	निर्मला पुतुल के काव्य में आदिवासी स्त्री जीवन -**डॉ.गौतम कुवर**	27
9	हिम्मतवाली इपिल -**प्रो. डॉ. जयश्री गावित**	32
10	'जहानूं' एक आत्मनिर्णयात्मक उपन्यास- **डॉ. गजानन चव्हाण**	34
11	चित्रा मुद्गल की कहानियों में दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ -**डॉ. अल्पेशभाई एच. गामीत**	37
12	'किन्नरों के अछूते जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण : यमदीप'- **डॉ.अशोक शामराव मराठे**	39
13	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चिंतन- **डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार**	42
14	क्लिनिकल ट्रायल के शिकार मरीजों और उनके परिवार की मर्मांतक पीड़ा का परामर्श 'गिनी पिग्स'.... **डॉ. विजय एकनाथ सोनजे**	45
15	दलित नारी की शोषण मुक्ति की गाथा - 'शिकंजे का दर्द' - **डॉ. सुनीता एन. कावळे**	48
16	मीनाक्षी स्वामी कृत "भूभल" उपन्यास में कानून व्यवस्था बनाम जन-चेतना -**डॉ. मृगेन्द्र राय**	51
17	21वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला विज्ञान लेखिका- **सत्य नारायण प्रसाद**	55
18	21वीं सदी में चित्रा मुद्गल की कथा-यात्रा- **डॉ. दिनेश प्रसाद साह**	59
19	सूर्यबाला के साहित्य में अभिव्यक्त नारी चेतना- **डॉ.आभा सिंह**	62
20	प्रवासी स्त्री कविता में जीवन यथार्थ का चित्रण -**डॉ. प्रिया ए.**	65
21	"नगाड़े की तरह बजते शब्द " काव्य संग्रह में आदिवासी विमर्श- **प्रो. देविदास क. बामणे**	69
22	इक्कीसवीं सदी का महिला लेखन : मैत्रेयी पुष्पा और अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी संवेदना एवं नारी मुक्ति -**डॉ. मेदिनी अंजनीकर**	73
23	खुरदुरी हथेलियाँ : खुरदरे यथार्थ की कविताएँ- **अर्चना अय्यप्पन**	76
24	अंजना संधीर के काव्य संग्रह 'अमरीका हड्डियों में जम जाता है' में चित्रित भारतीयों की वेदना- **डॉ.चित्रा मिलिंद गोस्वामी**	80
25	चित्रा मुद्गल: सृजन के विविध आयाम- **डॉ.यशोदा मेहरा**	83
26	21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका-**रजनी साहू 'सुधा'**	86
27	21 वीं सदी के उपन्यास लेखन में महिलाओं की भूमिका- **डॉ.अनिता प्रजापत**	90
28	सुशीला टाकभौरे के साहित्य में नारी चेतना- **प्रोफेसर डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे**	93
29	सुषमा मुनिंद्र जी की कहानियों में चित्रित महिला-**प्रो.डॉ.संजयकुमार शर्मा / भारती राजधर निकम**	96
30	चित्रा मुद्गल कृत पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा : एक किन्नर की घर वापसी का आख्यान- **डॉ. अमृत खाडपे**	99
31	मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में चित्रित समस्याएं- **डॉ. कंचन शर्मा**	102
32	शिवानी की कहानियों में नारी चिंतन के विविध आयाम -**डॉ. अशफाक इब्राहीम सिकलगर**	106

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

Sr.No	Title of the Paper & Author's Name	Pg.No
66	21 वीं सदी के हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका महेरुन्नीसा परवेज़ का उपन्यास 'पासंग''- **डॉ.नज़माबानु.ए.मलेक**	207
67	मधु काँकरिया कृत `सलाम आखिरी` में वेश्या-विमर्श- **डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील**	210
68	नीरजा माधव कृत `यमदीप` उपन्यास में किन्नर विमर्श- **डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण**	213
69	गीताश्री की कहानियों में स्त्री विमर्श- **डॉ. मंजु पु. तरड़ेजा**	216
70	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श : विशेष संदर्भ कुसुम अंसल का काव्य – **डॉ. संजीवकुमार नरवाडे**	219
71	कुसुम अंसल : 21 वीं सदी की एक सशक्त महिला उपन्यासकार - **डॉ. ममता नानकचंद पंजाबी**	222
72	`सलाम आखिरी` उपन्यास में चित्रित वेश्या विमर्श-**डॉ.प्रफुल कडू**	225
73	नारी में जागरुकता तथा परिवर्तन को प्रस्तुत करता उपन्यास ''ठीकरे की मंगनी''–**डॉ. वसीम मक्रानी**	227
74	मधु कांकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में चित्रित नारी एवं सामाजिक समस्या- **वृषाली पराड़कर एवं डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे**	230
75	21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखन की भूमिका- **डॉ.रविंद्र आर.खरे**	233
76	गीतांजलि श्री का उपन्यास : 'तिरोहित' के संदर्भ में....... **डॉ. तायडे राजाराम बाबुराव**	237
77	हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं द्वारा चित्रित नारी विमर्श' -**डॉ. साळुंखे मनिषा नामदेव**	240
78	मैत्रेयी पुष्पा औरस्त्री अस्मिता - उपन्यास 'विजन' के परिप्रेक्ष में – **डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे / संतोष कुमार कमला प्रसाद**	243
79	21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका- **अमिलाबेन चौहान**	246
80	नारी जीवन के संघर्ष की व्यथा-कथा- 'वह लड़की' **डॉ. स्वाति वसंतराव शेलार**	248
81	21वीं सदी का महिला साहित्य :विविध विमर्श- **प्रा.आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ**	252
82	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी विमर्श- **ज्योति .बी .थोरात /डॉ.बालकवि ल. सुरंजे**	254
83	कठपुतलियों की संवेदना (जी, जैसी आपकी मर्जी...नाटक के विशेष संदर्भ में) - **देशमुख संगीता रा.**	257
84	जीवन से जूझती संघर्षशील स्त्री की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' - **डॉ. रोहिदास धोंडीबा गवारे**	260
85	ममता कालिया के 'दौड' उपन्यास में नया जीवनमूल्य- **प्रा. म्हस्के एन.आर**	263
86	नारी स्वतंत्रता : स्त्री की नज़रों से- **डॉ.सुनिल चव्हाण**	265
87	21 वीं सदी के हिंदी महिला लेखिकाओं के साहित्य में व्यक्त नारी जीवन-**डॉ. राहुल सुरेश भदाणे**	268
88	वर्तमान हिंदी कवयित्रियों की कविताओं में बयाँ स्त्री मुक्ति के स्वर -**डॉ.सपना तिवारी**	271
89	21 वीं सदी के महिला उपन्यासकार -**डॉ. साळवकर उमाकांत सिताराम**	275
90	21 वीं सदी के प्रथम दशक की महिला साहित्याकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान- **डॉ. सुनिता बनसोड (भगत)**	279
91	`पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा` उपन्यास में किन्नर-जीवन का चित्रण- **प्रा. वैशाली प्र.अहिरे**	282
92	21वीं सदी की महिला लेखिकाओं का हिंदी साहित्य में योगदान- **प्रदीप कुमार मिश्रा**	286
93	इक्कीसवीं सदी के सवेदनशील कविता संग्रह पदचाप और वल्लरी-**प्रा. निकिता राजेंद्र नलावडे**	288
94	'गिलिगडु' उपन्यास में बुजुर्गों का यथार्थ चित्रण- **प्रा.डॉ.उपमवार जी.बी**	291
95	`दुक्खम सुक्खम` उपन्यास में नारी चिंतन- **प्रा. दिलीप पंडित पाटिल**	293
96	21वीं सदी के उपन्यास साहित्य में परिवार में महिलाओ का स्थान- **प्रा.कैलास काशिनाथ बच्छाव**	295
97	प्रभा खेतान के काव्य में नारी की अकेलेपन की पीड़ा- **डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा**	297

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

93

इक्कीसवीं सदी के संवेदनशील कविता संग्रह – 'पदचाप' और 'वल्लरी'

प्रा.निकिता राजेंद्र नलावडे,
असिस्टंट प्रोफेसर,हिंदी विभाग,
नवनिर्माण महाविद्यालय, रत्नागिरी, महाराष्ट्र
Email: niknalawade.67@gmail.com

सारांश –

चित्राजी महाराष्ट्रियन कवयित्री होने के बावजूद हिंदी लेखन में लेखनी चला रही है| नारी और पुरुषों की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति को लेकर शब्दों की धार बनाती है| पदचाप और वल्लरी काव्य संग्रह को लेकर मैंने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया है| अनेक अंकों में उनका लेखन प्रकाशित हो चूका है| कविता तथा कथाओं के लिए वे पुस्कारित हो चुकी है| नारी के जन्म से लेकर मृत्यु तक जो अवस्थाएँ बदलती है उनका सही रूप में वर्णन कविता संग्रह में मिलता है|

प्रस्तावना-

चित्राजी महाराष्ट्रियन हिंदी और मराठी कवयित्री तथा लेखिका के रूप में जानी जाती है। वे कहानी, कविता, बालसाहित्य पर अपनी लेखनी चला चुकी है। वे उम्र की बारह साल से लिखती रही है और प्रौढ़ता के समय प्रकाशन में आ चुकी है।लेखन की वह बालसुलभ भावनाएं और प्रौढ़ता की किनार उनकी कविताओं में झलकती है। हिंदी तथा मराठी कविता और कहानियों के लिए पुरस्कृत भी की जा चुकी है। उनके लेखन में जहां स्त्री विमर्श का विश्लेषण मिलता है वहां पुरुषों के प्रति संवेदनशीलता भी दिखाई देती है। महाराष्ट्रियन होने के बावजूद हिंदी भाषा में अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बावजूद उनकी कविताएं दिल को छू जाती है।

पदचाप-

यह कविता संग्रह 2013 में प्रकाशित हुआ है। इसमें सामान्यतः 58 कविताओं का समावेश दिखाई देता है।वे लिखती है- कविता चिरनविता है, जो हृदय से उफनकर आती है और शब्दों द्वारा बहने लगती है। कविता मन की कुशलता पर और बुद्धि की कुशाग्रता पर खरी उतरती है। जीवन जिस प्रकार नएपन को स्वीकारता है, उसी प्रकार के विचार कविताओं में चित्रित होते हैं। ईश्वर की कृपा से जीवन की नैया अपने आप सुख दुःख की लहरों से पार हो जाती है। हम अपने आसपास के लोगों में ईश ढूंढते है।१ नारी का जीवन जन्म से लेकर हर मोड़ पर एक नया चक्रव्यूह लेकर खड़ा होनेवाला होता है| जैसे वह एक घेरे से छूटकर दूसरे में अटकती चली जाती है। कभी खत्म न होनेवाला नयापन। कवयित्री का जीवन सामान्य लड़कियों से अलग दिखाई देता है। ननिहाल में बचपन बीता और बाद में होस्टल पर रहकर पढ़ाई पूरी की फिर तुरन्त भेज दी गई ससुराल। हर बार नए जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करती रही है। बच्चा, नौकरी और जीवन की प्रौढ़ता की ओर का सफर- लगा एक नया दौर। जीवन से जूझते हुए जितने अनुभव वह समेट पाई वे कविताओं में उतर गए तो कुछ हाथ से फिसलते निकल गए। भावनाओं का बवंडर रहा , अस्तित्व को झकझोरता बंड करता मन रहा। जीवन में नजदीक आते और दूर जाते पदचाप कानों में गूंजते रहे। स्त्री होने का अभिमान था लेकिन उसी के साथ हर पड़ाव पर आते नए विचार ,प्रसंग भी थे। वे अपने तक सिमटकर नहीं रही बल्कि समाज की भी बन गयी। अपनी माँ से लेकर समाज की महिलाओं तक कि भावनाएं उतर आती है उनकी कविताओं में। कभी अल्हड़ बनकर तो कभी उम्र की ढलान को व्यक्त करती उनकी कविताएं दिमाग में पैठ जाती है। प्रेम कविताएं युवाओं को अपने समय का एहसास दिलाती है। सामाजिक कविताएं समाजभान देती है। अपनी सहेलियों के दुःख दर्द को भी वे लिखती जाती है। वे अपनी जिन्दगी को लेकर सवाल करती है और जवाब भी देती है- 'कैसी है जिन्दगी? / एक खेला है जिन्दगी / एक मेला है जिन्दगी / दोनों गुजर जाते है / एक तार छेड़ने पर ही|'२

मतलबी दुनिया का राज बताती दिखाई देती है| अस्वस्थ मन को उघाड़कर रखती है| दिल की बाते करती है, दिल टूटने का एहसास भी व्यक्त करती है| अपने जीवन के अनुभवों से वे सिखाती भी है| विवाह तय होने पर अपनी भावी पति की संकल्पना

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

भी सुन्दरता से शब्दों में ढालती है- 'जिन्दगी के आंगन में / अचानक तेरे पदचाप सुने / वक्त रुक सा गया / हवा थम सी गयी / मैं भी अचंभित खुद पर / साँस रोके खड़ी रही..'३

कवयित्री अपने अस्तित्व को लेकर हमेशा सजग रही है| तकदीर को लेकर घटित घटनाओं का वर्णन करती दिखाई देती है| स्त्री होने पर गर्व महसूस करती है और स्त्रियों पर होते अन्याय के प्रति चिढ़ भी उठती है| समाज को बदलने का निर्णय भी कविताओं में व्यक्त होता है| वे खुद जमीन पर उतरकर काम करती है, लडकियों को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रेरणा देती है| कवयित्री के जीवन की प्रेरणा उनकी माँ है| वे उन पर आधारित कविताएँ भावुक होकर लिखती है| जीवन में प्राप्त पद, पैसा, प्रतिष्ठा सब का श्रेय माँ को देती है|

'माँ तेरे पेट में ही
सिख लिया था साँस लेना,
गिरने नही देना खुद को
स्वाभिमान से जिन्दा रहना' ४

बेटी के अनेक रूपों का वर्णन करती कवयित्री दिखाई देती है| बेटी घर की शान है, दहलीज का मान है, चिड़िया की किलकारी है और बेटी शिव की पार्वती भी है| बेटी गुडिया से खेलती है और पूरा घर मानो भर सा जाता है| जब वही बेटी ससुराल चली जाती है तो माँ के संस्कार और प्यार लेकर जाती है, पर मायका सूना कर जाती है|

'समझदार बड़ी
प्रकृति की भाषा बेटी
सुबह की किरन वह
काली रात को हटाती..'५

वल्लरी - यह काव्य संग्रह २०१६ में प्रकशित हुआ है| इसमें ६३ कविताए शामिल की गई है| लंबी कविता का प्रकार इसमें अपनाया है| मुक्त धारा में बेटी के रूप चित्रित होते दिखाई देते है| कवयित्री लिखती है- निर्मल मन से निरंतर बहती धरा है कविता| परिवार से लेकर समाज तक जितनी स्त्रियाँ सहवास में अति गई उनकी चौखट पर कड़ी होकर देखा और आँखों के भावों को व्यक्त करती कविताएँ उतरती गई|६ इन कविताओं में बचपन खेलता है, जवानी नाचती है, प्रौढ़ा कुम्हलाती है| नारी त्याग, तपस्या, संबल की देवता है| नारी दुर्गा और लक्ष्मी है| नारी परिवार को संभालती है और समाज को उभारती है| जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी बंधन में बांधती चली जाती है, रिशों की डोर तैयार करती है, अपने धागे से सबको बांध देती है और समय समय पर बंधन तोडकर चली भी जाती है|

'जिसे मिला अनोखी शक्ति का वरदान
उसी माँ ने किया विश्व का निर्माण..'७

कविता की धारा पुरानी होने के बावजूद अंदाज नया मालूम होता है| इस संग्रह में स्त्री की ख्वाइशों से लेकर अनुभवों का कथन दिखाई देता है| स्त्री की उलझन, तन्हाई, घुटन, एहसास, कशमकश साडी भावनाओं का दस्तावेज बन जाता है कविता संग्रह| स्त्री को शारीरिक सौन्दर्य से निकालकर बौद्धिक स्तर की ऊंचाई तक लाकर रख देती है| स्त्री कोई गुडिया नही है की जब जो चाहे उठाकर उसके साथ खेलने लगे, वह इंसान है और उसमे भावनाएं पलती है| स्त्री की अहमियत बताती कविताएँ दिल को छु जाती है| स्त्री मर्यादा को जानती है और अपनी हैसियत को भी|

'दहलीज है मर्यादा, जानती है वह
मन की परतों को, बना रखा हमेशा
मकान को घर बनाने में,
आज लाँघ दी दहलीज
समय की सीमा को पार करने की
जरूरत जन गयी है वह ...'८

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

नारी अब देवी और दासी की मूरतों से निकलकर बाहर आ चुकी है| वह अपना अस्तित्व निर्माण क्र चुकी है| वह किसी की मोहताज बनकर नही रहती बल्कि अपने बलबूते पर दुनिया की सैर क्र आती है| वह अपने सपनों की उडान भरना जानती है| वह परिवार की जिम्मेदारी उठाना जानती है| वह माँ बनती है, कर्तव्य निभाती है तो उसी के साथ भविष्य की डोर भी संभालती है| नारी बेहतरीन जिन्दगी सजाना जानती है| अब नारी का रूप बदल चूका है और उन सारे रूपों पर प्रकाश डालती कविताएँ अपनी सी लगती है|

कवयित्री नारी को वल्लरी के समान मानती है, जो हरे भरे रंग से आनन्द बांटती है और सारी दुनिया को अपने में समाती है| नारी समुन्द्र की लहर के समान है जो किनारे से टकराकर फिर समुन्द्र में स्म जाती है| नारी धार बन जाती है और निरंतर बहते हुए मंजिल को प् लेती है| नारी पुरुषों की नजर में विमर्श का विषय बनकर रह जाती है| नारी पर होते अत्याचार के प्रति मुंहतोड़ जवाब भी देती है|

'आज करती हूँ गर्जना
मानवी होकर जीना है
सारे अधिकारों को पाना है..'९

नारी के अनेक रूप कवयित्री रेखांकित करती है- विधवा नारी है जो त्याग करते हुए अपने परिवार को जिन्दा रखती है| परदेस गए पति की पत्नी है जो देश में रहकर अपने बच्चों के प्रति प्रमाणिक है| ढलती उम्र की नारी है जो अनुभवों का खजाना खोलती है| वेश्या है जो दिनभर सभ्यता का बुरका पहने पुरुषों को देखती है और रात में वही उसकी गली के चक्कर लगाते है| बाप द्वारा बिकी बेटी है जो शरीर को बेचते ठोकरे खाती रहती है पर जुबान नही खोलती|

विशेषता से वर्णन किया गया है ज्योतिबा की सावित्री, सीता और द्रौपदी का| आज की नारी को कवयित्री पुकारती है-

'आज की नारी को
बनना है शांत सीता-सी
अत्याचारों का विरोध कर
प्रज्वलित द्रौपदी अग्नि –सी..'१०

निष्कर्ष- चित्राजी की कविताएँ अतिशय संवेदनशील है| नारी मन को छुकर अनेक पहलुओं को उघाडनेवाली है| बेटी को माँ के संस्कार हमेशा सहनशील बनाते है और परिस्थिति विद्रोही बनती है| आज की नारी जब तक अपने बलबूते खड़ी नही हो जाती उसका कोई अस्तित्व नही है| अपनी मर्यादा में रहना वह जानती है उतना ही अपना रक्षण करना भी जानती है| आधुनिकता के नाम पर नारी को वेशभूषा नही बदलनी है तो विचार बदलने है| अपना भविष्य सुधारना है और उसी के साथ चरित्र भी संभालना है| आकाश बनकर जीना है और नदी बनकर बहना है|

सन्दर्भ सूचि-

१. चित्रा गोस्वामी- पदचाप कविता संग्रह, भूमिका से
२. वही- कैसी है जिन्दगी, पृ.१५
३. वही- पदचाप, पर.४५
४. चित्रा गोस्वामी - निभा माँ,(सं.विनोदकुमार) मंगलायन, पृ.६३
५. चित्रा गोस्वामी - काव्यदर्पण,(सं.डॉ एन पी चौधरी) बेटी, पृ.३६२
६. वही – वल्लरी कविता संग्रह, भूमिका से
७. वही – पृ.११
८. वही- पृ. १०१
९. वही –पृ.१०३
१०. वही – पृ.९२

भारतीय विद्या मंदिर, अमरावती द्वारा संचालित

भगवंतराव शिवाजी पाटील महाविद्यालय, परतवाड़ा, जि. अमरावती (महाराष्ट्र)

(नॅक द्वारा 'बी' श्रेणी प्राप्त)

हिंदी विभाग एवं **महाराष्ट्र हिंदी परिषद**

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का 28 वाँ अधिवेशन एवं अंतरराष्ट्रीय ई–संगोष्ठी

दि. 17 सितंबर 2021

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री **Asst.Prof.Nikita Rajendra Nalawade, Assistant Professor**

Navnirman Shikshan Santa's S.P.Hegshetye College of Arts, Commerce & Science, Ratnagiri

इन्हे परिषद के वार्षिक अधिवेशन के उपलक्ष्य में 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी में सहभागी के रूप में सम्मिलित होने हेतु यह प्रमाण-पत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है ।

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो. डॉ. जिजाबराव पाटील	प्रो. डॉ. अरुण घोगरे	प्राचार्य डॉ. राजेंद्र उमेकर
(प्रधान सचिव)	(अध्यक्ष)	(संयोजक)	(कार्याध्यक्ष)

niknalawade.67@gmail.com